(IJDSSH) 2018, Vol. No. 6, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

धर्म और समाज : गांधीजी के विचारों में

डॉ. सुधीर कुमार

जब से इतिहास और तर्कशास्त्र में एकता पैदा हुई है। धर्म के सरतत्व और उसकी ऐतिहासिक भूमिका को अन्तः सम्बन्धित करके देखा जाता है। यथार्थ की गहराई में जाने पर पायेंगे कि धर्म की सामाजिक भूमिका काफी जटिल है और केवल यह नहीं कहा जा सकता कि यह समानता को दिग्भ्रमित करने का साधन मात्र है, हमें मूल तत्वों पर विचार करना चाहिए और स्मरण करना चाहिए कि ऐतिहासिक भौतिकवादियों ने किस प्रकार ऐतिहासिक घटनाओं का मूल्यांकन किया है। इसका एक ही मापदण्ड है कि क्या वह ऐतिहासिक प्रगति की दिशा से मेल खाता है। दूसरे शब्दों में इतिहास की प्रकिया में किसी ऐतिहासिक घटना की क्या भूमिका है,उसका ऐतिहासिक प्रगति से मेल है या विरोध?

धर्म के ऐतिहासिक अध्ययन में सर्वप्रथम किसी राष्ट्र की संस्कृति पर धर्म के प्रभाव इसमें उसके योगदान एवं एक अभिन्न अंग के रूप में उसकी उपस्थिति के रूप में रोशनी डालनी चाहिए क्योंकि इतिहास संस्कृति और धर्म, प्रकृति एवं समाज के साथ समग्र संबंध को समझने उसका बोध करने एवं उसे अभिव्यक्ति करने की मानवीय कोशिशें हैं। इतिहास और संस्कृति का क्षेत्र बहुत अधिक व्यापक है। धर्म को इतिहास की मूल प्रेरक शक्ति का दर्जा अनैतिहासिक होगा क्योंकि इतिहास और संस्कृति केवल एक समय विशेष में और अंशत: ही धार्मिक रूपों में आये हैं। फिर भी इतिहास और संस्कृति के विकास में धर्म की भी एक भूमिका रही है। जिस तरह मनुष्य के विचार भाषा के माध्यम से व्यक्त होते हैं, ठीक उसी प्रकार किसी राष्ट्र की अध्यात्मिक गतिविधियाँ ऐतिहासिक दशाओं के अनुसार एक खास युग में धर्म के माध्यम से व्यक्त होती हैं। इसलिए लगता है कि समाज के लिए धर्म को आवश्यक है।

महात्मा गांधी द्वारा परिकल्पित समाज का पूरा का पूरा ढाँचा ही धर्म पर आधारित है। यहां यह विस्तार से स्पष्ट करने की आवश्यकता नहीं है कि गाँधीजी के धर्म का अर्थ नैतिकता है। गाँधीजी के धर्म का अर्थ, सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, अस्वाद ब्रहमचर्य, स्वदेशी और कार्यिक श्रम है। इसलिए गांधीजी के समाज का मानव या आदर्श मानव सत्याग्रही होगा जो पूर्णतः अहिंसक होगा और वह सभी प्रकार से धर्म और नैतिकता के सभी नियमों का पालन करनेवाला होगा। इसीलिए तो बापू ने राजनीति की बात की तो धर्म और नैतिकता पर आधारित राजनीति की बात की क्योंकि अधार्मिक और अनैतिक राजनीति समाज की भलाई के बजाय उन्हें हमेशा हानि ही पहुँचायेगा स्वार्थपरक राजनीति गरीब भोली-भाली जनता को ऐन-केन प्रकारेण शोषण करती हैं जैसा कि वर्तमान समाज में हो रहा है। इसलिए बापू ने धर्म पर आधारित समाज-व्यवस्था के लिए धर्म पर आधारित राजनीति की बात कहीं फिर उनके समाज-व्यवस्था में अर्थनीति भी नैतिकता को साथ लिये हुए होगी। ऐसी अर्थनीति में व्यापारी अपनी जरूरत पर ही मुनाफा लेगा उन्हें जन-कल्याण की चिंता ज्यादा रहेगी। अर्थनीति वेत्ताओं को सबसे पहले समाज के अंतिम व्यक्ति के कल्याण की बात सोचकर ही नीति निर्धारण करना होगा। इसलिए तो महान लेखक तथा विचारक रौम्याँ रोला ने कहा है "गांधीजी के क्रियाकलाप को समझाने के लिए यह हृदयंगम कर

लेना चाहिए कि उनका सिद्धान्त एक वृहद भवन के सदृश है जिसमें दो भिन्न-भिन्न मंजिले हैं। नीचे ठोस आधार है धर्म की मूल भित्ति का। इस विशाल एवं अड़िग निति पर आधारित है, राजनीतिक एवं सामाजिक आन्दोलन को गांधीजी ने जिस धर्म के रूप में कुछ और हो सकता है लेकिन मानव समाज तो उसे कर ही नहीं सकते"। हम सभी जानते हैं कि गांधीजी का यह विचार था कि जैसे ही नैतिक आधार खो बैठते हैं, वैसे ही हम धार्मिक नहीं रह जाते। नैतिकता का अतिकमण करने वाला धार्मिक होता ही नहीं। उदाहरणार्थ झूठा, निष्ठुर एवं विसंगत होते हुए कोई मनुष्य यह दावा नहीं कर सकता है कि ईश्वर उसके पक्ष में है।

गांधीजी के अनुसार व्यक्ति का नैतिक अनुशासन ही सामाजिक पुनर्निर्माण का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन है और ये नैतिक सिद्धान्त ही अहिंसात्मक समाज व्यवस्था का ढाँचा निर्धारित करते हैं। किसी भी दशा में मनुष्य को मनुष्य कहलाने के लिए इन सिद्धान्तों का अनुगमन करना ही चाहिए उनका मत है जो व्यक्ति नैतिकता के नियमों के अनुसार बिना अनुनय किये अपने जीवन को अनुशासित करने के लिए प्रस्तुत नहीं है उसे ठीक-ठीक मनुष्य नहीं का जा सकता इसलिए ठोस आधार पर समाज का पुननिर्माण करने के लिए उनका निर्देश है कि इन सिद्धान्तों की सामान्य जनता को व्रतों के रूप में स्वीकार कर लेना चाहिए।

इस सन्दर्भ में यह ध्यान देने योग्य दिलचस्प बात यह है कि समाज के निर्माण के लिए नैतिक पुनर्जीवन को आवश्यक मानना केवल महात्मा गांधी जी का इच्छानुकूल चिन्तन ही नहीं है जो अपनी अव्याख्येय आत्मा की वाणी से प्रायः परिचालित होते रहते हैं, बल्कि संसार के तटस्थ, विश्लेषक अग्रणी चिन्तकों के सुविचारित मतों द्वारा समर्थित तथ्य है। महान भारतीय विद्धान डॉ. राधाकृष्णन का विश्वास है "अध्यात्मिक जीवन की पवित्रता एवं श्रेष्ठता, मानव जाति के बन्धुत्व बोध तथा शांति के प्रेम, इन आदर्शों के आधार पर एक पूरी नयी पीढ़ी को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है"।

गाँधीजी, विवेकानन्द, डॉ. राधाकृष्णन तथा अन्य मानवतावादी विचारकों के साथ-साथ पी.ए. एलवुड, बडेन्ड रसेल, श्री के.एम. मुंशी, डॉ. डेलिस्ले जैसे विचारक भी समाज निर्माण के एवं संचालन के लिए धर्म और धार्मिक-नैतिकवान मनुष्यों का रहना अनिवार्य बतलाते है। इस सम्बन्ध में सी.ए. एलवुड का मत है "आर्थिक सम्बन्धों तक सीमित विचारों के अनुसार भौतिक पदार्थों के उत्पादन एवं वितरण की सही पद्धति सामाजिक समस्याओं का सामाधान कर देगी, शांतिवादी के अनुसार महत्वपूर्ण सामाजिक समस्या है अर्तराष्ट्रीय सम्बन्धों की प्राणी शास्त्री के लिए आणुवांशिकता का नियंत्रण ही एक मात्र समस्या है। नारी अधिकारवादी के लिए मुख्यतः नारी समस्या है। किन्तु वारतविक समस्या है एक मनुष्य के दूसरे मनुष्य से सम्बन्धों की समस्या। महान अंग्रेज चिन्तक बटेन्ड रसेल भी समाज के लिए नैतिक नियमों की अनिवार्यतता पर बल देते हुए कहते है "यदि मानव जाति की एकता की उपलब्धि करनी है तो हमारी बहुलांशतः अर्थतन आदिम हिंसकता को परिवंचित करने का मार्ग खोज निकालना आवश्यक है"। महात्मा गांधी के विचारों के समर्थन में श्री के.एम. मुंशी ने अनेक प्रमाण पुरूषों के उदाहरण दिये हैं। वे लिखते है- प्रो. कोटेल ने अपने ग्रन्थ "मैन एण्ड दी अननोन" में साहसपूर्वक घोषित किया है कि अच्छे जीवन की समग्र अवधारणा एव परिणाम स्वरूप समाज रचना ही विभ्रान्त हो गयी है, क्योंकि हमें अब तक सिखाया जाता रहा है कि पुनर्जागृति (रिनेसाँ) ही मानव परिपूर्णता की अंतिम सीमा है।

गांधीजी के विचार में मनुष्य का सबसे बड़ा और मुख्य धर्म 'सत्य है। बिना सत्य के समाज तो क्या यह सृष्टि ही संभव नहीं है। सत्य को परम धर्म मात्र बापू ने नहीं कहा, बल्कि भारतीय ऋषि- मुनियों और महान धर्म ग्रन्थों ने हजारों करोड़ों वर्ष पूर्व ही बतलाया है। ऋषियों

ने सत्य को धर्म के रूप में देखा है। सत्यं धर्माय दृष्टयो" इसीलिए सत्य से बढ़कर दूसरा धर्म नहीं "सत्यान्नास्ति परोधर्मः" भागवत ने तो धर्म के चतुष्पाद में इस कलयुग में केवल एक पाद को ही शेष माना है वह है सत्य अतः सत्य ही धर्म का पर्याय है। सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं कोई नीति नहीं कोई तप नहीं, कोई बल नहीं, सत्य पर ही सृष्टि संस्थित है सत्येन विधृता पृथ्वी, सत्य से ही सूर्य तपता है, वायु चलता है और सत्य पर ही स्वर्ग भी अधिष्ठित है। ॐ सृष्टि में सत्य के शिवाय किसी अन्य चीज की हरती नहीं है। सत्य ही ईश्वर की भी आत्मा मानी गई है, बल्कि यही नहीं सत्य को तो स्वयं परब्रहम परमेश्वर भी माना गया है। इसीलिए प्रभु ईसा ने शिक्षा दी है- तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुमको मुक्त कर देगा हम सत्यवीर सुकरात के शब्दों में कह सकते हैं सत्य बढ़कर कोई सत्य नहीं। इसलिए बिना सत्य धर्म के समाज की कल्पना असंभव ही है। प्रकृति सत्य का स्वयं साक्ष्य है और परमेश्वर इसका साक्षी है। इसीलिए जहाँ सत्य है, वहीं जप है, सत्यमेव जयते।

इसलिए तो गाँधी जी के विचार में मानव तथा मानव समाज के लिए सत्य धर्म होने के साथ-साथ सर्वप्रधान सिद्धान्त है, जो अपने में अनेक सिद्धान्तों को समेटे हुए है। स्वयं उनका सारा जीवन भी तो सत्य के साथ किया गया प्रयोग है। उनके विचार में सत्य के प्रतिनिष्ठा ही है हमारे अस्तित्व का एकमात्र औचित्यजो हमारी सनातन गतिविधि सत्य केन्द्रित होनी चाहिए। सत्य ही हमारे जीवन का प्राण तत्व होना चाहिए क्योंकि सत्य के बिना जीवन में किसी सिद्धान्त या नियम का पालन करना असम्भव है।

अब मानव समाज के लिए सत्य का पालन प्रत्येक क्षेत्र में करना चाहिए- राजनीती, अर्थनीति और धर्मनीति में गांधीजी प्राचीन आदर्शों की मान्यता के आधार पर भी कहते है कि मनुष्य को वीरतापूर्वक सत्य को धारण करना चाहिए. सत्य के लिए कष्ट सहना यहाँ तक कि सत्य के लिए मर मिटना चाहिए।

गांधीजी द्वारा विचारित समाज को अस्तित्व के लिए धर्म का दूसरा महत्त्वपूर्ण अहिसा है। अहिंसा विचार ने भी धर्म के कई सूक्ष्म तत्व समाये हुए है। इसी अहिंसा में प्रेम, सद्भाव, परपीड़ा का अनुभव, परोपकार, अस्तेय, अपरिग्रह, स्वदेशी आदि विचार समाये हुए है। समाज इसी अहिंसा के बल पर आधारित है। जिस प्रकार बिना सत्य के मानव तथा मानव समाज के अस्तित्व की कल्पना भी नहीं की जा सकती, उसी प्रकार धर्म के इस आवश्यक तत्व अहिंसा के बिना भी समाज का अस्तित्व संभव नहीं। बापू की अहिंसा कोई गुफाओं में रहने वाले साधु-संतो के लिए नहीं है बल्कि यह तो समाज के सभी मनुष्यों के लिए है जो गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हुए इस सृष्टि अस्तित्व और संचालन में अहम भूमिका निभाते आ रहे हैं।

गाँधीजी ने अहिंसा को परमधर्म स्वीकारते हुए कहा है अहिंसा का प्रचार का ही मेरा जीवन लक्ष्य है। इस लक्ष्य की सिद्धि के अतिरिक्त मेरी और कोई अभिरूचि नहीं है। अहिंसा को मानव समाज के लिए व्यवहारिक बतलाते हुए गांधीजी ने कहा है मैं स्वप्नदर्शी नहीं हूँ, मेरा दावा है कि मैं व्यावहारिक आदर्शवादी हूँ, अहिंसा धर्म ऋषियों और सन्तों के लिए ही नहीं है। यह सर्वसाधारण जनता के लिए भी है। अहिंसा हमारी प्रजाति का नियम है, जैसे हिंसा पशुओं का है। पशु में आत्मा सुप्त रहती है और शारीरिक बल को अतिरिक्त और कोई नियम नहीं जानता। मानव की मर्यादा के लिए एक उच्चतर नियम के प्रति आत्मिक बल के प्रति अपेक्षित है। फिर वैसे सभी नैतिक सिद्धान्तों का कुछ अर्थ ही नहीं होता, जब तक ये मानव के दैनिक व्यवहारों में आचरण के मार्गदर्शक का कार्य नहीं करते।

(IJDSSH) 2018, Vol. No. 6, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

आहिसा व्यक्तिगत धर्म नहीं, बल्कि व्यक्ति और समाज के लिए आध्यात्मिक एवं राजनीतिक आचारण का पथ है। बापू ने अहिंसा की महत्ता बताते हुए कहा, मेरे लिए स्वराज से भी बढ़कर अहिंसा का स्थान है. अहिंसा को अंगीकृत करने पर उसे सर्वोपरि मानना ही चाहिए केवल तभी वह अप्रतिरोध्य बन पाती है।

मानव समाज के लिए अहिंसा धर्म की महत्ता पर बापू इस प्रकार प्रकाश डालते है आज की सबसे बड़ी समस्या मानव जाति के विघटन एवं विभाजन को रोकने के लिए अहिंसा आवश्यक है। इसका आधारभूत कारण यही है कि मानव ने महान पाश्चात्य चितक बर्टड रसेल के शब्दों में आदिम हिंसकता का परित्याग नहीं किया है, उनके मतानुसार यदि मानव जाति को एकता की उपाधि करनी है तो हमारी बहुलांशतः अचेतन आदिम हिस्त्रकता को परिवंचित करने का मार्ग खोज निकालना आवश्यक है। भारत के शीर्षरथ दार्शनिक डॉ. राधाकृष्णन का भी कहना है कि "आध्यानिक जीवन की पवित्रता एवं श्रेष्ठता, मानव जाति के बंधुत्व बोध तथा शांति के प्रति इन आदर्शों को आधार पर एक पूरी नयी पीढ़ी को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है"।

सत्य और अहिंसा का धर्म के रूप में महत्व को इंगित करते हुए कहते है- सत्य ज्ञान के बिना केवल बाहरी कर्मकांड करके हम धर्म का वास्तविक महत्व नहीं समझते हैं।

मनुष्य को स्वयं अपने मन में बिठाकर विचारना होगा, अपना ध्यान एकाग्रचित करना होगा और यह मालूम करना होगा कि सत्य क्या है। यह सत्य जिसका भ्रम रूप से सब वस्तुएं है। अपने युग में प्रचलित धार्मिक व्यवहार से बुद्ध असंतुष्ट थे। अन्य किसी अवतार के समान ही उन्होंने कहा, हमें क्षमा चाहिर बलिदान नहीं। हम वास्तविक सहायता तथा मानवता की सेवा चाहते है। वही हमारी आवश्यकता है और हमें अन्य मूत्र तथा कर्मकाण्ड सम्बन्धी समारोह नहीं चाहिए, उन्होंने कर्मकाण्ड की भर्त्सना की और यह विचार प्रकट किया कि ये क्रियाएँ ये कर्मकाण्ड हमें परम सत्य तक नहीं पहुंचाते। यदि हम सत्य को पाना चाहते हैं तो हमें ठीक वही करना होगा जो बुद्ध और गांधीजी ने बताया।

डॉ. राधाकृष्णन के विचार में तो बुद्धिमानी और प्रेम ये दो वस्तुएँ प्रत्येक धर्म का मूलतत्व है बुद्ध गाँधीजी की ही तरह धार्मिक व्यक्ति थे इसलिए उन्होंने बुद्धिमानी और प्रेम पर अपने जीवन में बल दिया। महात्मा बुद्ध और महात्मा गांधी ने ज्ञान प्राप्त करने और मानवता की सेवा करने की सलाह दी। डॉ. राधाकृष्णन के विचार में यदि आप यह जानना चाहते हैं कि धर्म का सार क्या है? तो वह बुद्ध के जीवन का अध्ययन कीजिए। हम कहते हैं धर्म का सार जानने के लिए गाँधीजी के जीवन का अध्ययन भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना बुद्ध और ईसा मसीह का। ऐसा ही धर्म चाहिए समाज के अस्तित्व, जनकल्याण और समाज के लिए धर्म इसलिए भी आवश्यक है जैसा कि- धर्म विहीन मानव पशु के समकक्ष तो है ही , क्योंकि धर्म ही आत्मा है, धर्म ही तत्व ज्ञान है, धर्म ही प्राणी का प्राण, विधि-निषेध, पुण्य, सत्य एवं परमार्थ सार सर्वस्व अद्वैत बाह्य ऊँकार भी है। जहाँ धर्म है वहीं ओज है, वही तेज, धैर्य है, श्री तथा सौन्दर्य है, बांकी जो भी है धर्म ही मानव जीवन का सार सारतत्व है।

ग्रन्थसूची :-

1. त्रेमासिक हिन्दी पत्रिका सम्पादक शभुनाथ 20. बालामुकंद मक्कर रोड, आओ गुसन धर्म एक पुनर्विचार-समकालीन सृजन-41

2. गोपीनाथ दीक्षित. गांधीजी को चुनौती कम्युनिज्मको १० शातिलाल हरिजीवनशाह नवजीवन मुद्रणालय अहमदाबाद- 30014

3. विवेकानन्द साहित्य, पूर्वोतिचित।

4. गोपीनाथ दीक्षित, पूर्वालिखित।

5. विदेकानन्द, धर्म तत्व, प्रकाशक-रामकृष्ण मठ, नागपुर।

6. विवेकानन्द साहित्य।

7. डॉ राधाकृष्णन- रालोज्न एण्ड सासाइटी।

8. सी०ए०एलनुड. दि सोशल प्राब्लम (न्यूयाक) 1918, बटुंदरसेल: अॅथारिटि एण्ड दि इंडिविजुअल 1948-49।

9. फांसिस विलिमन- गांधी: दि मास्टर।

10. मद्रास रिपोर्ट, सोशलिस्ट पार्टी आफ इण्डिया का वार्षिक अधिवेशन 1960।

11. ऐथिकल रिलिजन।

12. महाभारत, शांतिपर्व, "नास्ति सत्य समंतप" तुलना कीजिए गांव बरावर तप नहीं कबीर महाभारत शांति पर्व, "सत्य ब्रहन सनातनम्" । तुलना कीजिए- महात्मा गांधी आत्मकथा।

13. हरिजन-25-5-35

14. मुंडोकपनिषद् 3/1/6

15. फ्रॉम यरवदा मंदिर।

16. महात्मा गांधी, हरिजन: जुलाई 1940

17. महात्मा गांधी यंग इंडिया, 11 अगस्त, 1920

18. देसाई, नन दायोलेन्स इन पीस एन्डवार, इन्ट्रोडक्शन।

19. हरिजन, 24 जुलाई 1950 90124

20. यंग इंडिया, 3 सितम्बर, 1925

21. चटेंडरसेल- ऑथारिटि एण्ड दि इंडिविजुअल 1948-49

22. डॉ. एस. राधाकृष्णनः सत्य की खोज पूर्वालिसित।

23. डॉ. रामजी सिंह- गांधी दर्शन मीमांसा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।